NOTIFICATION NO- 578/2025

NOTIFICATION DATE- 08/05/2025

STUDENT NAME: MANJU

SUPERVISOR NAME: PROF. DILEEP KUMAR SHAKYA

TOPIC: RAJESH JOSHI KI KAVITA MEIN ABHIVYAKT SAMAJIK YATHARTH KA ALOCHANATMAK ADHYAYAN

DEPARTMENT : DEPARTMENT OF HINDI FACAULTY OF HUMANITIES AND LANGUAGES

FINDING

साहित्य समाज का दर्पण है' और इस दर्पण मे वही प्रतिबिंबितहोता है जो समाज में मौजूद होता है. अपने शुरूआती दौर से ही हिंदी साहित्य में सामाजिक यथार्थ किसी न किसी रूप में विद्यमान रहा है. हिंदी साहित्य का सबसे महत्वपूर्ण हिस्सा भी वही है जो अपने समय के सामाजिक और राजनीतिक असमानताओं को लेकर प्रतिरोध का आख्यान रचती है.

किसी कवि की कविता का मूल्यांकन उसकी कविता की उपयोगिता, लोकप्रियता और जन-जन में प्रसार से जाना जाता है. राजेश जोशी की कविता की सार्थकता यही है कि उसे कोटेशन व नारों के रूप में पढ़ा और लिखा जाता है. दूसरी बात किसी कवि की कविता की महत्ता का संज्ञान तब और अधिक होता है जब उसके समवर्ती साहित्यकार उसकी सराहना करें. "राजेश की कविता हमारे समय का ऐसा संघनित दस्तावेज है कि केवल उसके आधार पर हम समकालीन भारत का एक दृश्य-लेख बना सकते हैं. इतने तात्कालिक ब्यौरे हैं यहाँ, इतने प्रसंग, पात्र और राजनीतिक-सामाजिक उद्वेलन. साथ ही उनकी कविता जीवन के उन तंतुओं की खोज करती है जहां उन उद्वेलनों का कंप सबसे तीव्र है और उन लोगों का यशोगान करती है जो निरंतर संघर्ष करते हुए जीवन को बदलने का ताब रखते हैं. उनकी कविता साहस के साथ सत्ता के सभी पायदान पर वार करती है, एक विराट सत्ता जो अर्थव्यवस्था से लेकर हमारी रसोई घर तक व्याप्त है. नागार्जुन और धूमिल के बाद सत्ता के तिलिस्म को उघाड़ने वाले सर्वाधिक सशक्त कवि राजेश जोशी हैं.

राजेश जोशी आजादी के बाद जीवन अनुभवों से विकसित कवि हैं. लगभग चार दशकों से उनकी रचना यात्रा परिदृश्य में मौजूद रही है. राजेश जोशी जागरूक, संवेदनशील कवि हैं. उन्होंने निजी अनुभवों की सामाजिकता, सामाजिक अनुभवों की वास्तविकता एवं स्वप्न के यथार्थपरक दृष्टि का विकास करके समकालीन रचनाधर्मिता को दिशा और दृष्टि प्रदान की है. राजेश जोशी का संपूर्ण जीवन एक समर्पित एवं प्रतिबद्ध साहित्यकार का जीवन है. उनके सृजन के केंद्र में उनका जीवन दर्शन एवं जीवन संघर्ष और जीवनानुभव है, जिसके सहारे वे अपने समाज व परिवेश की यथार्थता को ईमानदारी से समझने-समझाने की पुरजोर कोशिश करते हैं. यही कारण है कि उनकी रचनाओं में विरोध के विविध स्वर एवं संघर्ष के शताधिक स्तर स्वत: उभरकर सामने आ जाते हैं. अपनी इन रचनाओं में वे टकराते हैं अपने आप से, अपने मध्यवर्गीय संस्कारों से, समाज की यथास्थितिवादी मनोवृति से तथा उनसे अधिक अर्थतंत्र एवं राजतंत्र के तत्कालीन शोषक स्वरूप से. उनका सारा लेखन सोद्देश्य है और सभी रचनाओं के पीछे एक साफ सुलझी हुई सामाजिक-राजनीतिक जीवन - दृष्टि साफ झलकती है. महत्वपूर्ण बात यह है कि अनेक भयावह प्रतिकूलताओं से पंजा लड़ाते हुए भी वे कहीं भी निराश या हताश नहीं दिखते. उनका विश्वास है की सबसे कमजोर रोशनी भी सघन अंधेरे का दम तोड़ देती है.

राजेश जोशी निर्विवाद रूप से समकालीन दौर के सबसे महत्वपूर्ण रचनाकारों में से एक हैं. अपने समय की नब्ज को पड़कर उसे अपने लेखन के माध्यम से समाज में संप्रेषित करने में जितनी समर्थता और सक्षमता राजेश जोशी को प्राप्त हुई है शायद किसी अन्य कवि को नहीं.

उनकी कविताओं पर टिप्पणी करते हुए डॉ. संजय ढोडरे ने कहा है - "समकालीन परिवेश के तमाम साहित्यकारो को अपनी चिंतन कौशल से प्रभावित करने वाले राजेश जोशी का साहित्यिक योगदान महत्वपूर्ण है. राजेश जोशी बहुआयामी रचनाकार हैं. कहानी और नाटक के क्षेत्र में राजेश जोशी चर्चित रहे हैं .

राजेश जोशी एक प्रतिबद्ध कवि हैं. यही प्रतिबद्धता उनके काव्य संस्कार को रूपायित करती है, उन्हें प्रकृति से जोड़ती है, भीड़ में उलझे सामान्य इंसान के पास ले जाती है, समाज में फैली विसंगति, विभ्रम, अन्याय आदि के विरुद्ध आवाज लगाने की हिम्मत देती है. अपनी कविता की तरह राजेश जोशी संघर्षरत जनता की आंखें खोलते हैं, श्रमिक वर्ग को उनके अधिकारों की याद दिलाते हैं. व्यवस्था की विशेषता का उद्घाटन करते हुए क्रांति चाहते हैं बदलाव चाहते हैं.

सृजनात्मकता, पारदर्शिता और मनुष्यता राजेश जोशी के जीवन और साहित्य के अटूट अंग हैं. स्वयं प्रकाश जी राजेश जोशी की सृजनात्मकता के बारे में कयास लगाते हैं - "मुझे राजेश जोशी के घर में एक कोना ऐसा नजर नहीं आया जहां बैठकर राजेश 'मेरठ' 'पंजाब' 'उड़ जाऊंगा एक दिन' और 'भोपाल में बसंत' जैसी रुला देने वाली कविताएं लिखता है. कहां बैठकर लिखता है छत पर? सस्ते चायखानों में ? बिस्तर में ? 'आलू की आंखें' जैसी चुनौतीपूर्ण कहानी आख़िर किसी यात्रा के दौरान वेटिंग रूप में बैठकर तो नहीं लिखी जा सकती. मायकोवस्की की कविता का शानदार अनुवाद करने के लिए उसने

कहां चौकड़ी मारी होगी? मेरा ख्याल है कि वह अपने घर के पिछवाड़े एक तालाब खोद लेता होगा. उसमें एक नाव बनाकर छोड़ देता होगा... फिर उसमें बैठा-बैठा आराम से लिखता होगा.

राजेश जोशी की काव्य में इतनी विविधताएं एवं व्यापकता है कि देखकर एक सुखद आश्चर्य होता है कि उनका काव्य मानस कितना तरल और किस हद तक उदार है अपनी रचना प्रक्रिया को स्पष्ट करते हुए राजेश जोशी कहते हैं कि 'कविता बहुत तरह से आपके पास आती है कोई एक सेट फार्मूला नहीं हो सकता कभी आप कोई प्रभावशाली दृश्य देखते हैं और वह कविता में बदल जाता है कभी कोई पुराना अनुभव अचानक किसी घटना से जागृत हो जाता है और वह कविता में बदल सकता है कभी-कभी एक शब्द कविता में ढल सकता है और उसमें एक नई कविता शुरू हो जाती है'.

राजेश जोशी की कविताओं में भारतीय संस्कृति के प्रति अनन्य स्नेह और संपृक्ति दिखाई देती है. कहीं वे बिजली सुधारने वालों, बंजारों, नटों तथा कौवों के माध्यम से कर्मरत और संघर्षरत लोगों का वर्णन करते हैं तो कहीं लोकमत उसके अंधविश्वास परंपराओं लोकभाषा के माध्यम से लोक तत्व के दर्शन करते हैं. 'लेबर कॉलोनी के बच्चे' 'बिजली सुधरने वाले' 'मुनीर मियाँ और मौसम' जैसी कविताओं में मनुष्य का देशकाल प्रकृति के साथ उसके आश्वस्त रिश्ते में ही आकार पाता है. राजेश जोशी की संस्कृति की धारणा देश की सीमा का अतिक्रमण करते हुए विश्व मानवता को अपनी परिधि में समेटती है.

प्रेम, बुनियादी जरूरत का अभाव, स्त्री स्थिति, स्त्री शोषण, मानवतावाद, गरीबी, महंगाई, बेकारी, सामाजिक विषमता, कला,भूख, अंधविश्वास, पूंजीवाद, आम आदमी, सांप्रदायिकता, परिवार, व्यंग्य- विसंगति और विडंबनाएं आदि सामाजिक यथार्थ राजेश जोशी के काव्य में चित्रित हुए हैं.

हमारे समाज में स्त्री की स्थिति शोषणनीय है. राजेश जोशी की कविताओं में स्त्रियों की उपस्थिति भरपूर है. समसामयिक जीवन का ऐसा कोई भी विमर्श नहीं है जो राजेश जोशी की कविताओं और लेखनी से अछूता रहा है. वे नारी मुक्ति की, सामाजिक परिवर्तन की, मानवतावाद की आकांक्षा करते हैं. उनकी कविताएं रूढ़ीवादिता की प्रबल विरोधी हैं.

वे जाति - पाति रूढ़ियों के प्रबल विरोधी हैं, इसलिए वे 'खोड़ला गांव' को 21वीं शताब्दी का कलंक मानते हैं. गांव में हर वैज्ञानिक सुविधा उपलब्ध होने के बावजूद भी गांव के लोग रूढ़ीवादिता में फंसे हुए हैं. वे गांव का नाम लेना अपशगुन मानते हैं, इसलिए कवि ने चिंता व्यक्त करते हुए उनकी दकियानूसी मनोवृति का पर्दाफाश किया है .

भ्रष्टाचार, बेकारी, दरिद्रता, अभाव वर्तमान जीवन की समस्याएं हैं. चाहे राजनीतिक क्षेत्र हो या लालफीता शाही का, शिक्षा या न्याय व्यवस्था का सभी जगह लापरवाही, राजनीतिक रोब- दबाव व भ्रष्टाचार की आग लगी हुई है. राजेश जोशी ने अपनी कविताओं में भ्रष्टाचार के विरुद्ध स्वर बुलंद क्या है.

कवि राजेश जोशी की कविताओं में जीवन एवं जगत के वैविध्यपूर्ण अनुभव शामिल हैं. इसमें एक ओर भोपाल गैस कांड से पीड़ित लोगों के लिए गहरी सहानुभूति है, तो दूसरी ओर सड़कों से गुजरते हुए काम पर जा रहे बाल मजदूरों के प्रति गहरी संवेदनाएं हैं. राजेश जोशी उन थोड़े से कवियों में से हैं जो समय के मूल अंतर विरोधों को समझ कर व्यक्त करते हैं और मनुष्य की मुक्ति के संघर्ष को अभिव्यक्ति देने वाले केंद्रीय मेटाफर की खोज करते हैं.

वे लोगकथाओं, गीतों का लय और आशयों का भरपूर इस्तेमाल करते हैं. जिससे उनकी रचना एक अलग दुनिया की रचना लगती है. कवि राजेश जोशी वर्तमान व्यवस्था से पूरी तरह वाकिफ़ हैं. न्याय व्यवस्था से पीड़ित आम आदमी के प्रति उनमें हमदर्दी है. आज की न्यायिक व्यवस्था के चलते सच का अस्तित्व न रहकर सिर्फ झूठ का सहारा लिया जाता है. आज पूरी जनता के सामने इसकी तीव्रता नजर आती है. राजेश जोशी की कविता अनुभूतियों, संवेदनाओं एवं स्मृतियों की एक बैचेन अंतरयात्रा है. राजेश जोशी की कविताएं पढ़ने में जैसा और जितना सुकून मिलता है सुनने में भी वैसा ही सुकून मिलता है. उनकी कविता में गजब की संप्रेषण क्षमता है.

राजेश जोशी मुस्लिम तहजीब के इतने करीब हैं कि रीति-रिवाज, तीज - त्यौहार, वेशभूषा आदि सब कुछ जानते हैं. इसी कारण वे अपनी कविता में खैरियत मियां, खुदा की मेहरबानी, अल्लाह का फजल है जैसे आचार व्यवहार के जुमले भी इस्तेमाल करते हैं. साथ ही साथ वे मुनीर मियां, रमजान मियां, सलीम, रफीक, जुम्मा पहलवान जैसे मुस्लिम पात्रों तथा ताज भोपाली, अजमल कमाल जैसे उर्दू लेखकों को भी अपनी कविता में आत्मीयता से याद करते हैं. उनकी कविता में काली धोबिन की गली, बाजे वाली की गली, आदि भोपाल की गलियों के नाम उभर आते हैं और इन गलियों से भी कविता के अंतर्वस्तु बनती है. उनकी कविता में हिंदी उर्दू के शब्द ही सिर्फ नहीं आते बल्कि साझा संस्कृति के चित्र भी उभरते हैं.

निष्कर्ष रूप से यह कहा जा सकता है कि राजेश जोशी अपने व्यापक जीवन अनुभव तथा सूक्ष्म दृष्टि के कारण समकालीन कवियों में महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं. मध्य वर्ग का जीवन आम आदमी की पीड़ा शोषण पीड़ितों के प्रति दया भाव अपनापन आत्मीयता दीन दलितों के प्रति आत्मभाव रखने वाले राजेश जोशी की चार दशक से चली आ रही काव्य यात्रा दिन-प्रतिदिन प्रखर सुंदर व सुगठित होती जा रही है. वे संवेदना के साथ-साथ शिल्प को भी महत्वपूर्ण मानते हैं. वे आशावादी हैं. उम्मीद के कवि हैं. उनकी कविता जमीन से जुड़ी हुई है.उनका व्यक्तित्व कृतित्व बहुआयामी है. प्रतिभा संपन्न कवि राजेश जोशी समकालीन हिंदी साहित्य में सशक्त रचनाकार हैं.राजेश जोशी की कविताओं में भारतीय संस्कृति के प्रति अनन्य स्नेह और संपृक्ति दिखाई देती है. कहीं वे बिजली सुधारने वालों, बंजारों, नटों तथा कौवों के माध्यम से कर्मरत और संघर्षरत लोगों का वर्णन करते हैं तो कहीं लोकमत उसके अंधविश्वास परंपराओं लोकभाषा के माध्यम से लोक तत्व के दर्शन करते हैं. 'लेबर कॉलोनी के बच्चे' 'बिजली सुधरने वाले' 'मुनीर मियाँ और मौसम' जैसी कविताओं में मनुष्य का देशकाल प्रकृति के साथ उसके आश्वस्त रिश्ते में ही आकार पाता है. राजेश जोशी की संस्कृति की धारणा देश की सीमा का अतिक्रमण करते हुए विश्व मानवता को अपनी परिधि में समेटती है.